17 सितम्बर 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 12 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

सितम्बर (द्वितीय), 2014 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 30 अगस्त से 8 सितम्बर, 2014 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

जयपुर (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रात: दशलक्षण विधान के उपरान्त पण्डित रमेशचंदजी लवाण द्वारा समयसार पर प्रवचन, दोपहर में श्रीमती ज्योति सेठी द्वारा गुणस्थान विवेचन पर कक्षा, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल द्वारा समयसार एवं धर्म के दशलक्षण पर प्रवचन हुये। तत्पश्चात् उपाध्याय कनिष्ठ, वरिष्ठ के विद्यार्थियों व वीतराग विज्ञान महिला मंडल द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। सुगन्ध दशमी के दिन अ.भा. जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर द्वारा 'आह जैन वाह जैन' विषय पर आकर्षक सजीव झांकी लगाई गई, जिसे जयपुर के लगभग 2000-2500 लोगों ने देखा और उसकी भरपूर सराहना की। विधि-विधान के कार्य पण्डित गोम्मटेशजी शास्त्री, पण्डित करणजी शास्त्री एवं पण्डित साकेतजी शास्त्री ने संपन्न कराये।

जौहरी बाजार स्थित घी वालों के रास्ते में श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर में प्रात: पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

आदर्शनगर स्थित मुल्तान दिग. जैन मंदिर में पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा क्लास रूम पद्धति से प्रात:काल धर्म क्यों, दु:ख कहाँ, भगवान : पूज्यत्व का कारण, आकुलता रहित जीवन का एक ही उपाय : क्रमबद्धपर्याय, कण-कण की स्वतंत्रता आदि विविध विषयों पर एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म एवं सदाचार पर प्रवचनों का लाभ मिला। सभी श्रोतागणों विशेषकर नवयुवको पर प्रवचनों का बहुत प्रभाव पड़ा एवं धर्म के प्रति रुचि उत्पन्न हुई। समाज ने प्रवचनों से प्रभावित होकर महिने में एक बार इसप्रकार के प्रवचन करने का निवेदन किया। इस अवसर पर 20 हजार रुपये का सत्साहित्य एवं 15 हजार रुपये की सी.डी. घर-घर पहुँची। **- सुभाष जैन, मंत्री**

उदयपुर (राज.) : यहाँ इस वर्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल प्रवचनार्थ पधारे और इस अवसर पर एक नवीन प्रयोग किया गया कि उदयपुर में जहाँ-जहाँ भी स्वाध्याय की गतिविधियाँ चलती हैं उन सभी स्थानों पर सायंकालीन प्रवचन इत्यादि के कार्यक्रम नहीं रखकर एक बड़े हॉल में सामूहिक कार्यक्रम रखा गया।

इसके अन्तर्गत जैन युवा फैडरेशन उदयपुर ने हिरणमगरी सेक्टर-11 में स्थित आलोक स्कूल का ऑडिटोरियम (जिसमें लगभग 3000-3500 लोग बैठ सकते हैं) को लेकर वहाँ सायंकालीन कार्यक्रम आयोजित किए गए।

यहाँ दिगम्बर-श्वेताम्बर के सभी संप्रदायों के लगभग 2000-2500 साधर्मी प्रतिदिन पधारकर डॉ. भारिल्लजी द्वारा दशधर्मों पर हो रहे प्रवचनों का लाभ लेते थे। गायरियावास में डॉ. भारिल्ल की क्षमावाणी के दिन चर्चा हुई, वहाँ पर एक दिन पत्रकार सम्मेलन हुआ एवं दो दिन आकाशवाणी में अहिंसा, सत्य, संयम, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य पर वार्ता हुई, जो समय-समय पर रिले होगी। पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व पण्डित गुलाबचंदजी बीना के अतिरिक्त उदयपुर के स्थानीय विद्वान पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित भोगीलालजी जैन द्वारा विविध विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। इस अवसर पर लगभग 94320 घंटों की सी.डी. व डी.वी.डी. एवं लगभग 23 हजार रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा।

प्रतिदिन प्रवचनों के उपरान्त अलग-अलग मंदिरों के बच्चों द्वारा रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गये।

इसके अतिरिक्त प्रात:काल विविध स्थानों पर विविध विद्वानों द्वारा प्रवचनों का आयोजन हुआ, जिसमें **मुमुक्षु मण्डल** में पण्डित पीयूषजी शास्त्री द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक के सातवें अधिकार पर, **आदर्श नगर गायरियावास** में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री द्वारा, **नेमीनाथ जैन कॉलोनी** में डॉ. महावीरजी शास्त्री द्वारा समयसार पर, **सेक्टर 11** में पण्डित गुलाबचंदजी बीना द्वारा समयसार पर, **त्रिकालवर्ती जिनालय सेक्टर 14** में पण्डित खेमचंदजी शास्त्री द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर एवं **देवाली** में पण्डित वीरचंदजी शास्त्री द्वारा धर्म के दशलक्षण पर प्रवचनों का लाभ मिला।

इसप्रकार पूरे उदयपुर शहर में दशलक्षण पर्व अत्यंत उत्साह के साथ

(शेष पृष्ठ 3 पर ...)

सम्पादकीय –

क्या मुक्ति का मार्ग इतना सहज है ?

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जीवराज से स्नेह पाकर कर्मकिशोर गद्–गद् हो गया; क्योंकि उसे जीवराज से ऐसे स्नेह की आशा नहीं थी। वह सोचता था कि ''मेरे कारण ही तो प्रारंभ में इसकी ऐसी दुर्दशा हुई थी, अतः उससे मुझे उपेक्षा ही मिलेगी;'' पर ऐसा नहीं हुआ। इसकारण वह मन ही मन बहुत खुश था।

कर्मकिशोर ने जीवराज से पूछा – ''जीवराज! मेरी बहिन मोहनी और उसके साथ वेदनी आदि ने आपको इतना परेशान किया, आपकी बदनामी में कारण बनी, छलबल से आपका धन अपहरण किया और जब आपकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई तो ऐसी दुर्दशा की हालत में आपसे मुँह मोड़ लिया, आपके साथ दुर्व्यवहार करने लगी' आपकी उपेक्षा कर दी। फिर भी आप हम लोगों के साथ ऐसा सद्व्यवहार कर रहे हो? ऐसा सम्मान हमारे प्रति आपके हृदय में है, ऐसा साम्यभाव ! ऐसी सहज उदारता की संभावना हमें आपसे नहीं थी। हम डर रहे थे कि पता नहीं आप हमारे साथ कैसा सलूक करेंगे? हम सोच रहे थे – आप हमसे पूछेंगे – कहो, कर्मकिशोर! तुम्हारे साथ कैसा सलूक किया जाय? परन्तु आपने ऐसा कुछ नहीं किया, इसका राज क्या है? पहले तो मैं तुमसे यह जानना चाहता हूँ?

मोहनी ने तो मुझे तुमसे मिलने से ही मना किया था कि 'मत जाओ अपमानित होने के लिए। वह तुम्हें धक्का मारकर निकलवा देगा। पता नहीं इन मनुष्यों की अपने बारे में ऐसी गलत धारणा क्यों है? गल्तियाँ खुद करते हैं, दोष दूसरे के माथे मढ़ते हैं?'

मोहनी ने यह भी बताया कि ''देखो न! मैंने तो उसे बुलाया नहीं था, स्वयं ने ही मुझ पर मोहित होकर अपनी समता जैसी सुशील सुन्दर और सर्वगुण सम्पन्न धर्मपत्नी को छोड़कर मुझे अपनाया। न केवल सर्वसाधारण की तरह मात्र सम्पर्क किया, बल्कि मेरे प्रति उसके मन में ऐसा स्नेह उमड़ा, पागलन छाया कि वह सब सुध–बुध ही खो बैठा। उसका ऐसा स्नेह और आकर्षण देखकर मैंने भी सब ओर से अपना ध्यान हटाकर उसे ही अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया। मुझ अनजान को क्या पता था कि ये मनुष्य ऐसे भावुक और धोखेबाज होते हैं? कुछ दिनों बाद जब मैं उसके कई बेटे–बेटियों की माँ बन गई तो वह पता नहीं किसके कहने–सुनने से, किसके बहकावे में आकर पुनः अपनी पूर्व पत्नी समता को सोते–सोते में याद करने लगा। तब मैंने ऐसा अनुभव किया कि 'मेरी तरफ इसकी रुचि कम होती जा रही है और समता की ओर उसका आकर्षण पुनः बढ़ रहा है तो मैं उदास एवं हताश हो गई। यह तो आप जानते ही हैं कि ' जिसतरह एक म्यान में दो तलवारें नहीं समातीं, उसी तरह मैं और समता जीवराज के हृदय में एक साथ नहीं रह सकते थे। अतः मुझे जीवराज से उपेक्षा ही करनी पड़ी और मैं उससे नाता तोड़कर पुनः अपने पुराने रूप में आ गई।''

यहाँ ज्ञातव्य है कि कर्म की जाति–विरादरी में अनेक पुरुषों से प्रेम संबंध जोड़ना–तोड़ना अपराध नहीं माना जाता। इस कारण मोहनी द्वारा जीवराज की उपेक्षा करने से कर्मकिशोर को अटपटा नहीं लगा।

मोहनी ने अपने भाई कर्मकिशोर से यह भी कहा कि – ''तुम्हारी मित्रता भले ही अनादिकाल से है; पर अब शीघ्र ही छूटने वाली हैं; क्योंकि अब जीवराज अपनी पूर्व पत्नी समताश्री, पुत्री ज्योत्स्ना और पुत्र विराग के कहने में आ गया है। उसे हमसे मुक्त होने का मार्ग मिल गया है। अतः क्यों न तुम्ही उसका साथ छोड़ दो।''

(क्रमशः)

निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप 'वर्धमान' कोटा द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता ''आधुनिकता की दौड़ में सिमटते संस्कार'' का परिणाम घोषित कर दिया गया है, जिसमें सफल प्रतियोगी निम्न प्रकार हैं –

प्रथम स्थान – 1. श्रीमती ऋतु विकास वात्सल्य छिन्दवाड़ा
2. प्रेमलता, शोधछात्रा, नई दिल्ली

द्वितीय स्थान – 1. डॉ. सुरेश जैन बूंदी, (राज.)
2. हेमलता शोधछात्रा, नई दिल्ली
3. डॉ. संस्कृति जैन कोटा (राज.)

तृतीय स्थान – 1. संदीप बाबूलाल जैन दीप खरगोन
2. श्रीमती ममता जैन सुरैचा, सीतापुर
3. अनितेश जैन मंगलार्थी, मंगलायतन

सान्त्वना – 1. चौ.रामप्रकाश जैन 'राही' शिवपुरी
2. अर्पित जैन मंगलार्थी, मंगलायतन
3. मानसी जैन ललितपुर

प्रतियोगिता में 77 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई। इसके लिए सभी प्रतियोगियों का हार्दिक आभार व धन्यवाद।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

मनाया गया।

ज्ञातव्य है कि उदयपुर के पूर्व श्वेताम्बर पर्व के अवसर पर मुम्बई में अध्यात्म स्टडी सर्किल के तत्त्वावधान में भारतीय विद्या भवन में 8 दिनों तक डॉ. भारिल्ल द्वारा समयसार कर्ताकर्माधिकार पर प्रवचनों का लाभ मिला।

मुम्बई–भूलेश्वर : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर में समाज के विशेष आग्रह पर जयपुर से श्री टोडरमल महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील पधारे। प्रात: श्री जिनेन्द्र अभिषेक एवं पूजन संगीतमय वातावरण में अत्यंत उत्साहपूर्वक हुई, जिसमें पण्डितजी का मार्गदर्शन एवं पूजन के विशिष्ट छन्दों का अर्थ सुनने को मिला। पूजन के पश्चात् तत्त्वार्थसूत्र के एक–एक अध्याय पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। क्षमावाणी के दिन प्रात: सीमन्धर जिनालय में एवं दोपहर में भूलेश्वर मंदिर में क्षमावाणी पर विशेष व्याख्यान हुआ।

दशलक्षण महापर्व के पूर्व दिनांक 22 से 28 अगस्त तक अध्यात्म स्टडी सर्किल द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला के अन्तर्गत प्रतिदिन दोनों समय विभिन्न सर्किलों में विभिन्न विषयों पर व्याख्यान हुए।

न्यूजर्सी (अमेरिका) : यहाँ इन्टरनेशनल जैन संघ के तत्त्वावधान में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के सानिध्य में दशलक्षण पर्व बहुत उत्साहपूर्वक मनाया गया।

आपके द्वारा प्रतिदिन रात्रि में दो प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिक्रमण के पश्चात प्रथम प्रवचन में क्रमबद्धपर्याय, नय पद्धति, अनुयोग, कर्म सिद्धांत, अकर्तावाद आदि विषयों पर मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला एवं द्वितीय प्रवचन में दशलक्षण धर्म पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला। पर्व के दौरान 5 दिन प्रात:काल आत्मार्थियों की जिज्ञासा शांत करने हेतु शंका–समाधान का कार्यक्रम रखा गया। प्रतिदिन सायंकाल 4 से 5 बजे तक इन्टरनेट पर अमेरिका, कनाडा, नैरोबी एवं सिंगापुर के मुमुक्षुओं के लिए 16 कारण भावना पर मार्मिक प्रवचन किए गए।

ज्ञातव्य है कि पर्व के दौरान जर्सी सिटी दिगम्बर जैन मंदिर एवं दिगम्बर जैन मंदिर न्यूयार्क में भी आपके मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला।

दिनांक 7 सितम्बर को पण्डित राजमलजी पवैया द्वारा रचित वृहत् शांतिविधान का विशेष आयोजन सचित्र प्रोजेक्टर स्लाइड के सहयोग से किया गया, जिसमें लगभग 300 लोगों ने लाभ लिया। विधि विधान के समस्त कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के निर्देशन में संपन्न हुए।

सायंकाल दोनों प्रवचनों के मध्य स्थानीय साधर्मियों एवं बालक–बालिकाओं द्वारा ज्ञानवर्धक प्रस्तुतियां दी गई। समस्त आयोजन में श्री हिमांशुभाई, श्री आलोकजी, श्री अवनीश जैन एवं समस्त आई.जे.एस. सदस्यों का सक्रिय सहयोग रहा। **– सुधीर जैन**

अहमदाबाद–मेघाणी नगर (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर विदुषी डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा सरल, सुबोध भाषा में 'आत्मानुभूति कैसे ?' विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। आपकी प्रेरणा से लगभग 25 हजार रुपये का साहित्य घर–घर पहुँचा।

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर परमागम मंदिर में डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्यरत्न' द्वारा प्रात: समयसार पर, दोपहर में गोम्मटसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

औरंगाबाद (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा प्रात: समयसार पर प्रवचन एवं दोपहर में स्तोत्रों के अर्थ पर विशेष कक्षा का लाभ मिला। सायंकाल पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री द्वारा पाठशाला का संचालन किया गया। रात्रि में मेरी भावना के आधार पर विशेष प्रवचन के पूर्व स्थानीय विद्वान श्री संजयजी राउत व श्री विशालजी पाटनी के दशलक्षण धर्म पर व्याख्यान हुए।

प्रात:काल पण्डित विरागजी के निर्देशन में दशलक्षण विधान हुआ, जिसमें श्री कुशलजी यंबल का सहयोग रहा। **– निशिकांत जैन**

सागर (म.प्र.) : यहाँ महावीर जिनालय में पर्व के अवसर पर पण्डित संजयजी सेठी जयपुर द्वारा प्रात: समयसार के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार पर, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र के छठवें अध्याय पर कक्षा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात:काल स्थानीय विद्वान पण्डित अखिलेशजी द्वारा दशलक्षण मण्डल विधान किया गया। रात्रि में नवयुवा एवं महिला मण्डल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। कार्यक्रम में लगभग 400–500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। **– संतोष जैन, मंत्री**

कोटा (राज.) : यहाँ इन्द्र विहार में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा द्वारा प्रात: समयसार पर, दोपहर में 47 शक्तियों पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित विक्रांतजी शाह सोलापुर द्वारा सीमंधर जिनालय व पुराना मंदिर में प्रात: प्रवचनसार एवं रात्रि में धर्म के दशलक्षण पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए।

मंदसौर (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित अश्विनजी नानावटी एवं पण्डित प्रबलजी शास्त्री द्वारा प्रात: पूजन–विधान एवं विधान की जयमाला पर प्रवचन हुआ। सायंकाल धर्म के दशलक्षण पर प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। **– महेन्द्र कुमार जैन**

अजमेर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर सीमंधर जिनालय एवं ऋषभायतन में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात:काल पण्डित राजमलजी पवैया द्वारा रचित दशलक्षण विधान का आयोजन दोनों स्थानों पर क्रमश: पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर द्वारा किया गया। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन ऋषभायतन में हुआ। **– प्रकाशचंद पाण्ड्या**

सेलू (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित आराध्यजी शास्त्री टडैया मुम्बई द्वारा बारह भावना एवं धर्म के दशलक्षण पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित रिमांशुजी शास्त्री द्वारा विधान, प्रवचन एवं बालकक्षाओं का लाभ मिला। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत जैन महिला संघ द्वारा ''मैना सुन्दरी'' नाटक एवं पण्डित आराध्य टडैया द्वारा विविध कार्यक्रम कराये गये।

रायपुर (छत्तीसगढ) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन

(शेष पृष्ठ 7 पर ...)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन क्या, क्यों और कैसे –
शृंखला की छठवीं कड़ी –

क्यों नहीं अब तू सभी लोगों को सन्मार्ग पर लगने की प्रेरणा देता है ?

– परमात्म प्रकाश भारिल्ल
(महामंत्री–अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन)

हम सभी कषायों के चक्रवर्ती हैं।

हम सभी भोगों के मामलों में एक दूसरे के गुरु भी हैं, हम दिन–रात ही तो एक दूसरे को भोगों की प्रेरणा देते हैं। नगर में कोई नया चलचित्र आया हो और कदाचित हमें पसंद आ गया हो तो, जी भरकर उसकी प्रशंसा करते हैं, उसे देखने की प्रेरणा देते हैं और कभी–कभी तो हाथ पकड़कर उसे अपने साथ ले भी जाते हैं।

अरे भाई ! यह तो पाप की क्रिया है। स्वयं करना महापाप है और करने की प्रेरणा देना महा अपराध और उसकी अनुमोदना करना महाअनर्थ। आज तक हम सभी इसी में तो व्यस्त रहे हैं और हमने किया ही क्या है ?

क्या अब तुझे अपनी भूल समझ में आती है ?

क्या अब तू अपनी भूल सुधारना चाहता है ?

तब क्यों नहीं अब तू सभी लोगों को सन्मार्ग पर लगने की प्रेरणा देता है?

अरे तूने जैनकुल में जन्म लिया है और तुझे जिनवाणी मिली है, उसका मर्म बतलाने वाले गुरु मिले हैं, तब क्यों नहीं तू अपने सम्बन्धियों, मित्रों और परिचितों पर भी एक उपकार करता है; क्यों नहीं उन्हें भी इस मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है, क्यों नहीं हाथ पकड़कर ही उन्हें इस मार्ग पर ले आता है ?

अरे भाई ! यह तीर्थंकरों/गणधरों के समान कार्य है, वे भी तो भव्य जीवों पर बस यही उपकार करते हैं कि उन्हें सन्मार्ग दिखा देते हैं।

क्या तुझे याद नहीं आता कि तू किस तरह इस मार्ग पर आया था ?

यदि तू अत्यंत ही भाग्यवान होगा तो तेरे शैशवकाल में ही तेरी मां ही तेरी अंगुली पकड़कर तुझे यहाँ ले आयी होगी।

यदि कुछ देर से तेरा भाग्योदय हुआ होगा तो हो न हो तेरे बचपन में तेरे नगर/मुहल्ले के कोई मास्टरजी तुझे वीतराग–विज्ञान पाठशाला में ले गए होंगे।

या फिर कभी तेरा कोई शुभचिन्तक प्रेरणा देकर तुझे दैनिक स्वाध्याय में ले आया होगा।

क्या अब तुझे नहीं लगता है कि वह दिन तेरे जीवन का स्वर्णिम दिन था, जिसने तेरा मार्ग बदल दिया तेरा लक्ष्य बदल डाला, तुझे संसारमार्गी से मोक्षमार्गी बना दिया ?

जरा विचार तो कर कि यदि उन्होंने तेरे ऊपर यह उपकार नहीं किया होता तो आज तेरा क्या होता ?

तब तुझे भी तो यह विचार आता होगा न कि तेरी ही तरह अन्य जीव भी अपने कल्याण का यह मार्ग पायें ?

तब क्यों नहीं तू आज से ही प्रेरणा देकर, आदेश देकर, हाथ पकड़कर उन्हें अपने साथ इस मार्ग पर ले आता है, उन्हें अपना सहचारी बना लेता है?

एक से भले दो।

इससे तुझे भी मदद मिलेगी।

यदि कभी तेरा चित्त भटकता हो, स्वाध्याय में स्थिर नहीं होता तो तेरा सहचारी इसमें तेरी मदद करेगा।

यदि कभी तुझे कोई बात समझ में नहीं आ रही होगी तो तेरा साथी उसे समझने में तेरी मदद करेगा।

तेरा सहचारी सदाचार पालन में तेरा सहायक और तेरा प्रहरी बनेगा।

यदि तू तत्त्व प्रचार का कोई उपक्रम, कोई आयोजन करना चाहता होगा तो तेरा वही साथी उसमें तेरा सहयोगी बनेगा।

यदि तेरी आत्मसाधना और तत्त्व अभ्यास में कोई विघ्न, कोई अवरोध, कोई संकट आयेगा तो तेरा सहचारी उन्हें हल करने में तेरा सहयोगी बनेगा। जीवन के उस मोड़ पर, जहां अपनी आत्म साधना के लिए तुझे किसी के सहयोग की आवश्यकता होगी और किसी अन्य के पास तेरे साथ खड़े रहने का समय नहीं होगा, तब तेरा यही साधर्मी सहयोगी एक बार फिर तेरा सहचारी होगा; जिसे एक दिन तू हाथ पकड़कर जिनमंदिर ले आया था, आज वह रोज–रोज तेरा हाथ पकड़कर तुझे अपने साथ जिनमंदिर ले जाएगा।

जब पीड़ा के कारण तेरा चित्त तत्त्वाभ्यास में स्थिर नहीं होगा तेरा यही सहचर तुझे अपने अनंत सुख स्वभाव का स्मरण करवाएगा।

अरे ! अब अधिक क्या कहूँ ? तूने जिनका जीवन सुधार दिया क्या अब वे तेरा मरण नहीं सुधारेंगे ?

और फिर अधिक विचार क्या करना ? तू कोई गलत काम तो कर नहीं रहा है।

तू भव्य जीवों के आत्मकल्याण में निमित्त बन।

उन्हें सन्मार्ग पर लगा।

तेरा भी कल्याण होगा और उनका भी।

(अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की योजना – ''आवो मारी साथे'' को क्रियान्वित करने में सहयोगी बनें।)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

Om Vitragi Dev-Shastra-Guru Namah

वीतराग–वाणी

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust, Mumbai celebrates 125th Janma Jayanti of Parampujya Sadgurudevshree Kanjiswami & 101th Janma Jayanti of Pujya Bahenshree Champaben By presentating "Mangal-Vani"

Shravan Vad 2, 2070; 12th August, 2014

'Mangal-Vani' is collection of 21 video pravachans of Pujya Gurudevshree Kanjiswami. It contains **9 new** video pravachans along with **12** currently available. These video pravachans are recorded in Nairobi, Songadh and Dadar. **13** of these video pravachans are on 'Shree Samaysaarji' and **8** are on 'Bahenshree Na Vachanamrut'. These lectures are also supplemented with **Gujarati and Hindi Subtitles**. These feature will help in improving the understanding and it will help future generation to connect with our Dev-Shastra-Guru, Gurudevshree and BhagwatiMataji. Further details of these video pravachans are summarized in table below. 'Mangal-Vani' is available in following formats:

DVD sets
With Gujarati and Hindi Subtitles are available at SKKPT office

Website (Click icon for Mangal-Vani on web page)
Available on www.vitragvani.com under Gurudevshree's Lecture-Video section

PC, Tablets and Smart Phones
Bring electronic devices at SKKPT office for all the video pravachans

YouTube (Click icon for Mangal-Vani on YouTube)
Search 'Mangal-Vani Pravachan' on www.youtube.com

(Click on Table for Mangal-Vani Video Pravachans with Gujarati Subtitles on web page)

No.	Shashtra	Gatha	Language	Time	Quality
1*	Shree Samaysaar	6	G	57.29	Poor
2	Shree Samaysaar	11	G	60.44	Very Good
3	Shree Samaysaar	14	G	62.09	Very Good
4	Shree Samaysaar	15	G	60.52	Good
5	Shree Samaysaar	15	G	60.08	Very Good
6	Shree Samaysaar	17,18	H	60.32	Very Good
7	Shree Samaysaar	17,18	H	60.58	Very Good
8	Shree Samaysaar	17,18 & 31	G	59.05	Very Good
9	Shree Samaysaar	38	G	59.50	Good
10	Shree Samaysaar	38	G	60.26	Good
11	Shree Samaysaar	14	G	27.04	Very Good
12	Shree Samaysaar	320	G	32.08	Very Good
13*	Shree Samaysaar	320	G	57.53	Good

* Video taken from long camera shot

No.	Shashtra	Bol	Language	Time	Quality
1	Bahenshree na Vachnamrut	13-20	G	60.29	Good
2	Bahenshree na Vachnamrut	21-25	G	58.51	Very Good
3	Bahenshree na Vachnamrut	26-30	G	54.55	Poor
4	Bahenshree na Vachnamrut	31-33	G	58.32	Poor
5	Bahenshree na Vachnamrut	36-39	G	59.20	Very Good
6	Bahenshree na Vachnamrut	47-50	G	56.54	Poor
7	Bahenshree na Vachnamrut	51-56	G	58.12	Very Good
8	Bahenshree na Vachnamrut	412-413	G	58.40	Very Good

Please convey the news of 'Mangal-Vani' release to other Mumukshus. Let us all spread Guru-Vani as much as possible.

We welcome your valuable feedback and queries at info@vitragvani.com.

Let us all join in paying tribute to Vitragi Dev–Shastra–Guru on this memorable occasion of Pujya Bahenshree Champaben's 101th Janma Jayati.

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust (SKKPT)
302, Krishna Kunj, Plot No. 30, Navyug Society,
V. L. Mehta Marg, Vile Parla (West), Mumbai-400056
Tel. No.: 022-26104912, 022-26130820
Email: info@vitragvani.com, Web: www.vitragvani.com
Facebook: www.facebook.com/vitragvanee

વીતરાગ–વાણી

(Click on Gujarati 'Mangal-Vani' for Gurudevshree Video Pravachans with Gujarati Subtitles on web page)

(Click on Hindi 'Mangal-Vani' for Gurudevshree Video Pravachans with Hindi Subtitles on web page)

दृष्टि का विषय

3 प्रथम प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अपनी आत्मा को एकत्वबुद्धिपूर्वक जानने के कारण उसको निश्चय कहा। निश्चय कहने का एकमात्र हेतु यही है और परपदार्थों को ''यह मैं नहीं हूँ'' – ऐसा जानना ही अतन्मय होकर जानना है और इसलिए ही इसे व्यवहार कहा।

अपनी आत्मा को ''यह मैं हूँ'' ऐसा जानने को एकाकार होना भी कहते हैं। 'एकाकार' का मतलब भी उपयोग की एकाग्रता से नहीं है। उपयोग तो ज्ञानगुण में होता है; जबकि 'मैं और ये एक हैं' ऐसी जो श्रद्धा गुण की परिणति है, उसी का नाम एकाकार है।

इसप्रकार केवली भगवान पर निश्चय और व्यवहारनय घटाये जाते हैं। इसका मतलब यह है कि **तुम अपनी आत्मा को ''यह मैं हूँ'' – ऐसा जानोगे, तब तुम्हें निश्चयनय का उदय होगा।**

इसप्रकार यह तो स्पष्ट हो गया कि यहाँ उपयोग की एकाग्रता को 'तन्मय' होना नहीं कहते हैं।

अनुभूति के काल में जो आत्मानुभव प्रकट होता है, मात्र उसी का नाम अनुभव नहीं है। अनुभूति के काल में भगवान आत्मा के दर्शन के साथ उसमें जो एकत्व स्थापित हुआ; वह एकत्व जबतक कायम रहेगा, तबतक अनुभव भी कायम रहेगा। आत्मानुभूति उस समय नहीं रहेगी; लेकिन अनुभव रहेगा।

किसी व्यक्ति को २५ वर्ष का व्यापार का अनुभव हो तो वह व्यक्ति जब खाना खाता है, तब भी उसे वह अनुभव रहता है।

युद्ध में लड़ाई करते समय भी श्रद्धा में 'त्रिकालीध्रुव ही मैं हूँ' – ऐसी प्रतीति रह सकती है कि नहीं ? ज्ञानगुण की प्रगट पर्याय में भी यह बात रहती है कि नहीं ? क्योंकि धारणा प्रगट पर्याय का नाम है। चारित्र में भी अनंतानुबंधी कषाय के अभाव से जो शुद्धि हुई है, वह भी उसे युद्ध के समय विद्यमान है या नहीं ?

अतीन्द्रिय आनंद की जो कणिका उसे जगी थी, वह आनंद उसका समाप्त नहीं हुआ है; क्योंकि वह यदि समाप्त हो जाये तो वह मिथ्यादृटि हो जाये। आप यह नहीं कह सकते हैं कि उसे अनुभव नहीं है।

नाश्ता करने के बाद जो तृप्ति मिलती है, वह तृप्ति उसके बाद भी कायम रहती है। डॉक्टर भी कहते हैं कि पेट में पड़े हुए अनाज का स्वाद मुँह में आता रहता है। करेला खाने के बाद मुँह में कड़वी डकारें आती रहती हैं, मुँह कड़वा बना रहता है। इससे यह निश्चित हुआ कि तृप्ति नाश्ता करने के बाद भी रहती है; क्योंकि नाश्ता करने के बाद वैसी अतृप्ति नहीं रहती, जैसी नाश्ता करने के पहले थी।

वह तृप्ति, ज्ञान में से एक भी समय को नहीं निकलती है; उस तृप्ति पर ध्यान जाए या न जाए – यह अलग बात है; लेकिन ज्ञान में से एक समय के लिए भी वह तृप्ति नहीं निकलती।

जिसे हम लोग उपयोग समझते हैं, वह तो ध्यान की बात है। **'ध्यान' का अर्थ ही उपयोग की एकाग्रता होता है। आत्मा ध्यान से चौबीस घंटा ही खाली नहीं है अर्थात् कहीं न कहीं उपयोग लगा ही रहता है।**

निश्चय–व्यवहारनय की चर्चा में जो यह कहा था कि केवली भगवान स्व और पर को एकसाथ जानते हैं, वहाँ दूरी से कोई मतलब नहीं है; क्योंकि जो स्व है, वह तो कभी दूर होता ही नहीं है; दूरी तो पर के संबंध में ही संभव है। परपदार्थ ही कोई कम दूर हो सकता है, कोई ज्यादा दूर हो सकता है; किन्तु स्व के साथ तो कभी समीपता या असमीपता का सवाल ही नहीं है। वे केवली भगवान स्व और पर को – चाहे वे समीप हों या असमीप हों, एक साथ ही जानते हैं।

केवली भगवान के ऊपर नय लगाने का तो मात्र इतना प्रयोजन है कि हमें यह समझ में आ जाये कि नय एक समय में एक ही व्यक्ति पर लगते हैं।

केवली भगवान, अपनी आत्मा को जानने के कारण निश्चय केवली हैं और पर को जानने के कारण व्यवहारकेवली हैं। वे स्व और पर को प्रतिसमय एक साथ जानते हैं। ऐसा नहीं है कि जब वे 'स्व' को जानेंगे तब वे निश्चयकेवली होंगे और जब वे पर को जानेंगे, तब व्यवहारकेवली होंगे। उन केवली भगवान में न तो व्यक्तिभेद है, न क्षेत्रभेद है, न ही कालभेद है।

केवली भगवान तो एक ही है, हमने उनके निश्चयकेवली और व्यवहारकेवली ऐसे दो भेद कर दिए। **जिस समय स्व को जानने के कारण वे निश्चयकेवली हैं, उसी समय पर को जानने के कारण वे व्यवहारकेवली हैं।**

यहाँ एक प्रश्न संभव है कि जब केवली भगवान को निश्चय–व्यवहार की जरूरत ही नहीं है तो हमने केवली भगवान पर निश्चय–व्यवहार लगाए ही क्यों ?

जैसे – हम कहें कि हमारी संस्था के सदस्य बन जाओ और

पाँच-पाँच हजार रुपये की किश्तों में पच्चीस हजार रुपये दे देना। किन्तु कोई ऐसा कहे मैं तो पूरे पच्चीस हजार एक साथ ही दूँगा; क्योंकि कल का क्या भरोसा ? तो उसको देने के लिए हम मना नहीं करते; लेकिन हमारे यहाँ किश्तों में देने की सुविधा है – यह अवश्य बता देते हैं।

श्रुतज्ञानियों को तो यह सुविधा है कि वे किश्तों में जानें, लेकिन केवली भगवान एक साथ जान सकते हैं; इसलिए वे एक साथ जानें, उन्हें आगे-पीछे जानने की सुविधा नहीं है।

इसलिए बारम्बार ऐसा कहते हैं कि **जिसप्रकार केवली स्व और पर को एक साथ जानते हैं; उसीप्रकार श्रुतज्ञान में भी स्व और पर एक साथ जानने में आते हैं; क्योंकि स्व-परप्रकाशक तो आत्मा का स्वभाव है।**

आत्मा के इस स्व-परप्रकाशक स्वभाव में कालभेद नहीं होता है।

यह स्व-परप्रकाशक स्वभाव प्रतिसमय का स्वभाव है, यह कादाचित्क स्वभाव नहीं है। ज्ञान में/उपयोग में ऐसी कमजोरी है ही नहीं कि वह स्व-पर को एक साथ नहीं जान पाये।

केवलज्ञान में तो स्व और पर दोनों एक साथ झलकते हैं, जबकि क्षयोपशमज्ञान का यह नियम है कि ज्ञान की प्रत्येक क्षयोपशम पर्याय में क्या ज्ञेय बनेगा – यह निश्चित है। श्रुतज्ञान में जितना ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम होगा, उतना जानेगा। यदि लाख को जानने का क्षयोपशम है तो लाख को जानेगा और यदि एक को जानने का क्षयोपशम है तो एक को जानेगा।

यदि एक पदार्थ को ही जानने का क्षयोपशम एक बार में हो तो कोई भी पदार्थ जानने में नहीं आयेगा; क्योंकि इन्द्रियज्ञान से तो पुद्गल ही जानने में आता है और 'एक' तो पुद्गल परमाणु है और पुद्गल परमाणु तो इन्द्रियों की पकड़ में आता ही नहीं है। जानने में तो स्कन्ध ही आता है और स्कन्ध में तो अनेक द्रव्य हैं। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ 3 का शेष...)

चैत्यालय चूडीलाईन में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मड़देवरा द्वारा एवं पंडरी में पण्डित नितिनजी शास्त्री खड़ैरी द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। दिनांक 1 सितम्बर को श्री दिगम्बर जैन मंदिर टैगोर नगर में **चार अनुयोग** विषय पर पण्डित अभिषेकजी द्वारा गोष्ठी संचालित की गई। इसमें पण्डित वीरेन्द्रजी बकस्वाहा एवं पण्डित नितिनजी द्वारा चार अनुयोग का विवेचन किया गया। यही गोष्ठी श्री दिगम्बर जैन मंदिर शंकर नगर में भी आयोजित की गई। **– अशोककुमार जैन**

अलवर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर रत्नत्रय दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई द्वारा छह दिनों तक नाटक समयसार पर प्रवचन हुये। प्रात:काल दशलक्षण मण्डल विधान पण्डित अजितजी शास्त्री द्वारा पण्डित ऋषभजी शास्त्री जयपुर के सहयोग से कराया गया।

दिगम्बर जैन मंदिर नसियांजी में खण्डेलवाल दिगम्बर जैन समाज द्वारा संचालित नसियांजी में सायंकाल पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित ऋषभजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रवचन हुए।

मीनिया पोलिस (अमेरिका) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर द्वारा श्री महावीर जैन मंदिर में प्रतिदिन पूजन-विधान के उपरांत दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

चेन्नई : यहाँ पर्व के अवसर पर विभिन्न दिगम्बर जिनालयों में विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रवचन हुए, जो निम्नानुसार है –

(1) अंबतूर – पण्डित जम्बुकुमारजी शास्त्री।

(2) कोलतुर – पण्डित जम्बुकुमारजी शास्त्री, डॉ. उमापतिजी शास्त्री, पण्डित इलंगोवनजी शास्त्री, पण्डित नाभिराजनजी शास्त्री, पण्डित विनोदकुमारजी जैन, पण्डित महावीरजी जैन।

(3) आदमबाक्कम – डॉ. उमापतिजी शास्त्री, पण्डित निपुणजी शास्त्री, पण्डित राजेशजी शास्त्री।

सिलीगुडी (पश्चिम बंगाल) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित अभिनवजी मोदी मैनपुरी द्वारा प्रात: पूजन व उसका अर्थ किया गया एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

आगामी कार्यक्रम...

टोडरमल स्मारक भवन में विधान महोत्सव

कार्तिक माह के अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर गुरुवार दिनांक 30 अक्टूबर से गुरुवार दिनांक 6 नवम्बर 2014 तक ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री देवलाली के विधानाचार्यत्व में विधान महोत्सव सम्पन्न होने जा रहा है।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि विद्वानों का प्रवचन-कक्षा आदि के माध्यम से लाभ प्राप्त होगा।

सभी साधर्मीजन महोत्सव का लाभ लेने हेतु हार्दिक आमंत्रित हैं।

सर्वोत्तम नागरिक का पुरस्कार प्राप्त

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन को दिनांक 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में वर्ष 2014 का सर्वोत्तम नागरिक पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार नई दिल्ली के इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस द्वारा उन्हें उनकी कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी और लगनपूर्वक देशसेवा के लिए प्रदान किया गया।

इसके अतिरिक्त दिनांक 19 को अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ नई दिल्ली द्वारा 'देवज्ञ शिरोमणि' की उपाधि से भी विभूषित किया गया।

ज्ञातव्य है कि डॉ. जैन को पूर्व में 'प्रो.रामगोपाल सोनी मैमोरियल आवार्ड ऑफ बेस्ट ऑथर 2011' प्राप्त हो चुका है।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्‌गार –

जयवन्त हो !

– ब्र. दुलीचंद, इन्दौर

सोनगढ निवासी सुप्रसिद्ध भारत के अनूठे अध्यात्मसंत श्री कानजीस्वामी इस युग में महान परमोपकारी हुए हैं। आपने अपनी अद्वितीय प्रतिभा द्वारा भौतिक युग के अन्धकारमय जग में विलुप्तप्राय हो जाने वाली अध्यात्मधारा को पुन: नवजीवन प्रदान करने के लिए किया है। आपका यह महान उपकार कदापि भुलाया नहीं जा सकता, जिसप्रकार यह अध्यात्मधारा अनादि काल से तीर्थंकरों द्वारा प्रवाहित होकर अन्य ज्ञानी गणधरादि पुरुषों द्वारा प्रचारित होती आ रही है, उसी प्रकार आपने इस कलियुग में भी तीर्थंकरों और गणधरों के उसी महान कार्य को करके जग में भव्य जीवों का उपकार किया है।

आपके गुणों की महिमा क्या करें, आप सत्य मार्ग के प्रदर्शक हैं, चैतन्य रत्नों के पारखी-जौहरी हैं, वस्तुस्वरूप के सम्यक् ज्ञाता हैं, वस्तुस्वातंत्र्य की घोषणा करने वाले हैं, परमार्थ पथ में आरूढ शाश्वत सुख के मार्गप्रदर्शक हैं, अनेकानेक उपसर्गविजयी हैं। आपश्री के द्वारा युगयुगान्तर तक सत्य-शांति के पथ एवं शाश्वत सुख का प्रसार अधिकाधिकरूप से निरन्तर होता रहे यही भावना हमेशा रहा करती है।

आपश्री के प्रवचनों में सदैव भेदज्ञान कराने की मुख्यता से द्रव्य-गुण-पर्याय को बतलाने वाला निश्चय-व्यवहार, निमित्त-उपादान, कारण-कार्य की स्वतंत्रता आदि का विशद विवेचन रहता है, जो पर पदार्थ में एकत्वबुद्धि छुड़ाने में सहायक है। मैं आज से पन्द्रह वर्ष पूर्व आत्मधर्म मासिक पत्र की कथनशैली पढकर प्रभावित हुआ, फलस्वरूप प्रवचन सुनने की भावनावश निकट पहुंचकर वाणी श्रवण करने पर मेरा सारा जीवन बदल गया, वस्तु की स्वतंत्रता का भान हुआ। यह आपश्री का मुझ पर महान उपकार है। वह कदापि भुलाया नहीं जा सकता। ....

.... अन्त में परमादरणीय स्वामीजी का विनयभाव से, हृदय से स्वागत करते हुए उनके दीर्घायु होने की कामना करता हूँ और भावना करता हूँ कि उनके द्वारा प्रचारित सिद्धान्त विश्व में जयवंत हों।

जिनेन्द्र पूजन संग्रह का विमोचन

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ श्री वीतराग विज्ञान मण्डल द्वारा दिनांक 10 अगस्त को वात्सल्य पर्व के अवसर पर पण्डित राजेन्द्रकुमार जी जैन जबलपुर द्वारा रचित 'जिनेन्द्र पूजन संग्रह' का विमोचन किया गया। पुस्तक का संपादन पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा किया गया है। इच्छुक साधर्मीजन **संपर्क करें –** 09200099200, 09300642434

छहढाला प्रवचन शब्दश: प्रकाशित

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 125वीं जन्मजयन्ती वर्ष में छहढाला के समस्त प्रवचन दो भागों में हिन्दी भाषा में प्रकाशित किए गए हैं। इसका प्रकाशन श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा किया गया है। ग्रन्थ प्राप्ति के इच्छुक साधर्मीजन संपर्क करें – 09300642434 (विराग शास्त्री, जबलपुर), 02226130820 (मुम्बई)

शोक समाचार

(1) दलपतपुर (म.प्र.) निवासी पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री का दिनांक 30 अगस्त को देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) उदयपुर (राज.) निवासी श्रीमती पानीबाई धर्मपत्नी स्व.श्री मोहनलालजी जैन (वजुवावत) का दिनांक 1 अगस्त 2014 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) गुवाहाटी (असाम) निवासी श्री नेमीचंदजी पाण्ड्या का दिनांक 12 दिसम्बर 2009 को हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 506/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

प्रकाशन तिथि : 13 सितम्बर 2014

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127